International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 03-12-2023, Accepted: 19-12-2023, Published: 04-01-2024
Volume 10, Issue 1, 2024, Page No. 1-2

डॉ. बच्चन सिंह की साहित्येतिहास दृष्टि

शुभी गुर्जर[1], ममता गोयल[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
[2] प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्येहास लेखन परंपरा सन् 1839 में तासी से आरंभ होती है, और वर्तमान समय तक आते–आते इसमें अनेक ग्रन्थ जुड़ जाने से समृद्धता आ गयी है। प्रस्तुत लेख में डॉ. बच्चन सिंह की साहित्येतिहास दृश्टि को केन्द्र में रखा गया है। जिनका ग्रन्थ उदारीकरण के दौर में सन् 1996 में आया। साहित्येतिहासकार जिस समय में साहित्येतिहास लेखन करता है उस समय के मूल्यों का प्रभाव अतीत की घटनाओं पर भी अवश्यंभावी होता है। इस प्रकार कह सकते है कि केवल अतीत ही वर्तमान को प्रभावित नही करता, वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता हुआ चलता है। इस प्रभाव के परिणामस्वरूप अतीत की घटनाओं के प्रति नया दृश्टिकोण विकसित होता है।

मूल शब्दः साहित्येतिहास, प्रवृत्ति, परंपरा, समाज, साहित्य, अपभ्रंश काल, बद्धरीति, मुक्तरीति, भक्ति आंदोलन, उपनिवेशवाद नवजागकरण

समाज का स्वरूप सदा से गतिशील रहा है। जिसका प्रमुख कारण मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति और नयेपन की चाह हैं। जिस समाज को हम आज देख रहे हैं वह आज से कुछ वर्श पूर्व वैसा नहीं था जैसा आज है, और न ही आने वाले समय में ऐसा रहेगा। साहित्य समाज का चेहरा होता है, प्रत्येक युग की परिस्थितियों और प्रवृत्तियों को साहित्य अपने भीतर समाहित किये रहता है। साहित्य के अध्ययन द्वारा हम साहित्य के विकास और बदलती हुई प्रवृत्तियों को समझ सकते हैं। हिन्दी साहित्येतिहास लेखन पंरपरा में आचार्य शुक्ल का ग्रन्थ वह नींव का पत्थर है जिस पर आगामी साहित्येतिहास ग्रन्थ किसी न किसी रूप में आश्रित अवश्य हैं। इस संदर्भ में डॉ. बच्चन सिंह लिखते हैं कि– ''न तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य का इतिहास को लेकर दूसरा नया ग्रन्थ लिखा जा सकता है और न उसे छोड़कर। नए इतिहास के लिए शुक्ल जी का इतिहास एक चुनौती है।'' बच्चन सिंह ने इस चुनौती को स्वीकार कर नया पैटर्न गढ़ने का प्रयत्न किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि ''प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चितवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है। जनता की चितवृति में परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चितवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।'' आचार्य शुक्ल ने यहां आर्थिक परिस्थिति को शामिल नहीं किया है, जबकि बच्चन जी ने बदलाव के केन्द्र में आर्थिक परिस्थितियों को प्रमुखता से विश्लेशित किया है। बच्चन जी के अनुसार– ''कोई भी बदलाव यों ही नहीं आता, बल्कि उसके कुछ कारण होते हैं। दो संस्कृतियों का अंतराबलंबन परिवर्तन के लिए उतना कारगर नहीं होता जितना समाज के बुनियादी ढांचे को बदलने वाले आर्थिक कारण। मुख्य कारण आर्थिक ही होता है; सांस्कृतिक गौण।'' डॉ. बच्चन सिंह ने आदिकाल नामकरण को अस्वीकृत करते हुए, 1000 ई. से 1400 ई. तक की समयावधि के लिए ''अपभ्रंश काल : जातीय साहित्य का उदय'' नामकरण उचित ठहराया है। आपका तर्क है कि यह समय।

भाशा की दृश्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस समयावधि में अधिकांश रचनाएं अपभ्रंश भाशा में ही हुई हैं। इतिहास की विकास प्रक्रिया के तहत हिन्दी साहित्य को अपभ्रंश से जोड़कर ही समझा जा सकता है, क्योंकि अपभ्रंश काव्य की अनेक प्रवृत्तियॉ और काव्यरूप हिन्दी साहित्य को विरासत में मिले हैं। अपभ्रंश काल को बच्चन सिंह ने 4 उपविभागां में विभक्त किया है। प्रथम उपविभाग के भीतर हिन्दी भाशा, जाति और साहित्य की अवधारणा प्रस्तुत की गई है। द्वितीय उपविभाग का नाम। 'अपभ्रंश काव्य और हिन्दी की रचनाऍ है, 'इसके भीतर बौद्ध–सिद्धों, नाथों तथा जैन एवं जैनेतर काव्य का वर्णन है। तृतीय उपविभाग का नाम श्रृंगार और वीर दर्पपूर्ण काव्य है, इसमें रासो साहित्य को रखा गया है। चतुर्थ उपविभाग का नाम 'प्राकृत पैंगलम और हिंदी के कवि' है; इसमें हिन्दी के जातीय कवि शीर्शक से तहत विद्यापति, अमीर खुसरो और मुल्ला दाउद को रखा गया है, जो क्रमशः मैथिली, खड़ी बोली और अवधि के प्रयोक्ता हैं। इन बोलियों का उदय अपभ्रंश से ही हुआ और हिन्दी साहित्य की समृद्धता में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

भक्तिकाल के लिए मध्यकाल संज्ञा को अनुपयुक्त मानते हुए डॉ. बच्चन सिंह ने कहा कि ''मध्यकाल जकड़ी हुई मनोवृत्ति का परिचायक है। भक्तिकाल भक्तिकाल है, मध्यकाल नहीं।'' भक्ति आंदोलन को उन्होंने प्रथम नवजागरण माना है, जिसका प्रसार संपूर्ण भारत में हुआ मगर अलग–अलग समय पर। बच्चन जी के पूर्ववर्ती विद्वानों में भक्ति आंदोलन के उदय संबंधी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के ही मत प्रचलित थे। जहॉ एक ने भक्ति आंदोलन के उदय में इस्लाम की भूमिका को स्वीकारा है वही दूसरे न इस धारणा को सिरे ने नकार दिया है। बच्चन जी ने संतुलित रूप में अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहा है कि इस्लाम के आगमन को भक्ति के उदय का एकमात्र कारण मान लेने पर भक्काल खंडित हो जायेगा, और यदि मुसलमान न आए होते तो न ही संत काव्य लिखा जाता न सूफी काव्य। इतिहास के आर्थिक पहलू पर विचार करते हुए निम्न वर्ग की आर्थिक सम्पन्नता को भी इन्होंने भक्ति के उदय का कारण माना है। इस प्रकार संत और सूफी दोनों आंदोलन सामंतवाद का विरोध कर रहे थे और हिन्दुओं–मुसलमानों के बीच भाईचारा स्थापित करने की दिशा में प्रयासरत थे। भक्तिकाल के भीतर निर्गुण काव्यधारा में संत और सूफी काव्य को रखा गया है, और सगुण काव्यधारा के भीतर कृश्ण भक्ति काव्य और राम भक्ति काव्य को रखा गया है। ये सभी आंदोलन तत्कालीन परिस्थितियों की उपज हैं। सामाजिक दृश्टि से संत और सूफियों के भक्ति आदोलनों को प्रतिवादात्मक और कृश्ण–रामभक्ति आंदोलनों को यथास्थितिवादात्मक कहा जा सकता है। रीतिकाल के लिए

प्रचलित उत्तर मध्यकाल नाम को बच्चन जी गणितीय भ्रमात्पादन मानते हैं। रीतिकाल अपने पूर्ववर्ती भक्तिकाल से एकदम भिन्न भूमिका पर खड़ा हुआ है। रीतिकाल नाम सर्वप्रथम आचार्य शुक्ल ने दिया था, बच्चन जी भी इस नामकरण को तत्कालीन काव्य प्रवृत्तियों के अनुरूप पाते हैं। परन्तु रीतिकाल का उपविभाजन उन्होंने नए ढंग से किया है। रीतिकाल के प्रचलित उपविभागां रीतिबद्ध और रीतिमुक्त को बच्चन जी ने अवैज्ञानिक कहा और इन शब्दों को उलटकर नया उपविभाजन किया– बद्धरीति और मुक्तरीति। बच्चन जी ने भी आचार्य शुक्ल के मत का समर्थन करते हुए रीतिकाव्य–परंपरा का आरंभ चिंतामणि से ही माना है, क्योंकि साहित्य के इतिहास में विकास देखा जाता है। चिंतामणि से ही एक अविरल अखंड परंपरा शुरू होती है। बद्धरीति काव्य को दो भागों में वर्गीकृत किया; प्रथम वर्ग में रीति चेतस कवि अर्थात ऐसे कवि जो रीति ग्रन्थ लिख रहे थे तथा द्वितीय वर्ग में काव्य चेतस कवि शामिल किए, जिनका मन रीति ग्रन्थों में नहीं रमा कविता करना उनका मुख्य लक्ष्य था। मुक्तरीति काव्य को भी दो वर्गों में बांटा गया; अभिजात्य वर्ग में केवल बिहारी को रखा गया तथा स्वच्छंद धारा के भीतर घनानंद, ठाकुर, बोधा, आलम और द्विजदेव को शामिल किया। डॉ. बच्चन सिंह ने रीतिकाल के भीतर ही 'हिन्दी की उर्दू शैली के काव्य' को भी स्थान दिया। हिन्दी की उर्दू शैली की कविता का आरंभ इसी काल में हुआ था। इस समय हिन्दी कविता ब्रजभाशा में लिखी जा रही थी और उर्दू कविता खड़ी बोली में। इस भाग में मीर, गालिब और नज़ीर की कविताओं के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों का विश्लेशण किया गया है। बच्चन जी लिखते हैं कि– ''कविता से जमाने की पहचान तो की जा सकती है पर जमाने के उत्थान–पतन से समानांतर कविता का उत्थान पतन नहीं होता। प्रायः संकटकाल की कविताएं अधिक
संवेदनशील हो उठती हैं।''

आधुनिकल काल का आरंभ बच्चन जी सन् 1857 से मानते हैं। आधुनिक काल शब्द से दो अर्थ ध्वनित होते हैं– मध्यकाल से भिन्नता और नवीन इहलौकिक दृश्टिकाणे। 1857 भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण वर्श है, इसी वर्श उपनिवेशवाद के विरोध में भारतीयों की प्रथम व्यापाक प्रतिक्रिया देखी गयी थी। आधुनिक काल को तीन उपविभागों में बांटा गया है– नवजागरण युग (1857–1920), स्वछंदतावाद युग (1920–38), उत्तरस्वछंदतावाद युग (1938–अद्यतन)। नवजागरण का प्रसार भी भक्ति आंदोलन की भॉति अलग–अलग जगह अलग–अलग समय पर हुआ। इसके उदय का मुख्य कारण बच्चन जी ने अंग्रेजी उपनिवेशवाद को ही माना है। अंग्रेजों की आर्थिक शोशणकारी नीतियॉ, रेल, तार, संचार माध्यमों का विकास तथा पाश्चात्य शिक्षा सभी ने समेकित रूप से भारतीयों की राश्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य किया। छायावाद नामकरण को बच्चन जी अर्थहीन बताकर ख़ारिज कर देते हैं; 1920 से 1938 तक के समय के लिए वह स्वछंदतावाद युग नाम उपयुक्त पाते हैं। क्योंकि स्वच्छंदतावाद शीर्शक में तत्कालीन गद्य और पद्य को सार्थकता के साथ समाहित किया जा सकता है, साथ ही यह अन्य भारतीय और भारतीयेत्तर साहित्यों से जुड़ पाता है। उत्तरस्वछंदतावाद युग के अंतर्गत बच्चन जी ने छह प्रवृत्तियों का विवेचन किया है; प्रगति प्रयोग का पूर्वाभास, प्रगतिवाद, विप्लवगान और गांधीवादी काव्य, पय्रोगवादी काव्य और नई कविता, मोहभंग का काव्य या आधुनिकतावादी काव्य, जनवादी काव्य। इस प्रकार बच्चन जी ने अपने साहित्येतिहास ग्रन्थों में स्वतंत्र भारत की परिस्थितियों परिवर्तनों, मान्यताओं और समस्याओं के आलोक में साहित्यकारों और साहित्यिक कृतियों का मूल्यांकन किया है। बच्चन जी की साहित्येहास दृश्टि अपने पूर्ववर्ती साहित्य इतिहासकारों से साम्य भी दर्शाती है और नवीनता भी प्रस्तुत करती है। साहित्य इतिहासकार जिस युग में खड़े होकर ग्रन्थ लिखता है, उस युग के मूल्यों के चश्में से ही वह परवर्ती ग्रन्थों का मूल्यांकन करता है। डॉ. बच्चन सिंह आचार्य रामचंद्र शुक्ल की परंपरा के साहित्येहासिकार है मगर उनकी दृश्टि और शुक्ल जी की दृश्टि में अंतर भी स्पश्ट रूप से देखा जा सकता है। बच्चन जी ने साहित्येतिहास और आलोचना दोनों क्षेत्रों को अपनी लेखनी में समृद्ध किया है। शाधे क्षेत्र में बच्चन जी की साहित्येतिहास दृश्टि पर कार्य होना चाहिए, ताकि उनकी दृश्टि का विश्लेशण और बेहतर तरीके से हो सक।

संदर्भ सूची

1. सिंह, बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृश्ण प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2014, पृष्ठ (vii), (viii), 22, 77, 78, 187, 215, 238, 279, 329
2. सिंह, बच्चन, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयाग संस्करण 2021, पृश्ठ 15, 228, 229
3. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य सरोवर, आगरा, पृष्ठ 15